

घरेलू श्रम में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में पुरुषों की भागीदारी की भूमिका

प्रिया सिंह¹ and डॉ. सपना त्रिपाठी²

¹शोधार्थी, गृह विज्ञान-विभाग

²शोध निर्देशक, गृह विज्ञान-विभाग

सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सारांश

घरेलू श्रम में लैंगिक समानता आधुनिक समाज के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है। घरेलू कार्यों में खाना बनाना, सफाई करना, कपड़े धोना, बच्चों की देखभाल करना, बुजुर्गों की सहायता करना तथा परिवार के दैनिक प्रबंधन से संबंधित अनेक गतिविधियाँ शामिल होती हैं। परंपरागत रूप से इन कार्यों को महिलाओं की जिम्मेदारी माना जाता रहा है, जबकि पुरुषों की भूमिका को मुख्यतः आय अर्जित करने और परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने तक सीमित रखा गया है। इस प्रकार का लैंगिक श्रम-विभाजन महिलाओं के समय, शिक्षा, रोजगार, व्यक्तिगत विकास और सामाजिक भागीदारी को प्रभावित करता है। प्रस्तुत समीक्षा पत्र का उद्देश्य घरेलू श्रम में पुरुषों की भागीदारी की भूमिका का विश्लेषण करना तथा यह समझना है कि पुरुषों द्वारा घरेलू जिम्मेदारियों को साझा करने से लैंगिक समानता को किस प्रकार बढ़ावा मिल सकता है। इस समीक्षा में लैंगिक भूमिकाओं, सामाजिक मान्यताओं, पारिवारिक संबंधों, कार्य-जीवन संतुलन, बाल-देखभाल और नीतिगत उपायों से संबंधित प्रमुख अवधारणाओं पर चर्चा की गई है।

मुख्य संकेतक: घरेलू श्रम, लैंगिक समानता, पुरुषों की भागीदारी, अवैतनिक कार्य, लैंगिक भूमिकाएँ, परिवार, सामाजिक परिवर्तन।

परिचय

घरेलू श्रम परिवार और समाज के सुचारु संचालन का आधार है। भोजन तैयार करना, घर की सफाई, बच्चों की देखभाल, परिवार के सदस्यों की भावनात्मक आवश्यकताओं को पूरा करना और दैनिक गतिविधियों का समन्वय करना ऐसे कार्य

हैं जो परिवार के प्रत्येक सदस्य के जीवन को प्रभावित करते हैं। इसके बावजूद घरेलू श्रम का सामाजिक और आर्थिक महत्त्व अक्सर पर्याप्त रूप से स्वीकार नहीं किया जाता। विशेष रूप से महिलाओं द्वारा किए जाने वाले अवैतनिक घरेलू कार्यों को अनेक समाजों में स्वाभाविक जिम्मेदारी के रूप में देखा जाता है। परिणामस्वरूप, महिलाओं के योगदान को आर्थिक मूल्य, सामाजिक मान्यता और निर्णय लेने की शक्ति के संदर्भ में अपेक्षित महत्त्व नहीं मिल पाता।

लैंगिक समानता का अर्थ केवल महिलाओं और पुरुषों को समान अधिकार प्रदान करना नहीं है, बल्कि जिम्मेदारियों, अवसरों, संसाधनों और निर्णय लेने की शक्ति का न्यायपूर्ण वितरण भी है। इस दृष्टिकोण से घरेलू श्रम में पुरुषों की भागीदारी विशेष महत्त्व रखती है। जब पुरुष खाना बनाने, बच्चों की देखभाल करने, घर की सफाई करने और बुजुर्गों की सहायता करने जैसे कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं, तो घरेलू जिम्मेदारियों का वितरण अधिक संतुलित हो सकता है। इससे महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, विश्राम, सामाजिक गतिविधियों और व्यक्तिगत विकास के लिए अधिक समय मिल सकता है।

अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की देखभाल संबंधी रिपोर्टों ने अवैतनिक देखभाल कार्य के असमान वितरण और महिलाओं पर इसके प्रभाव को रेखांकित किया है। इसी प्रकार, संयुक्त राष्ट्र का सतत विकास लक्ष्य 5 लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और अवैतनिक देखभाल तथा घरेलू कार्यों को मान्यता देने, कम करने और साझा करने पर बल देता है। इस संदर्भ में पुरुषों की भागीदारी को केवल घरेलू सहायता के रूप में नहीं, बल्कि समान अधिकारों और साझा जिम्मेदारियों पर आधारित पारिवारिक व्यवस्था के महत्त्वपूर्ण घटक के रूप में समझना आवश्यक है।

समीक्षा के उद्देश्य

इस समीक्षा पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. घरेलू श्रम में महिलाओं और पुरुषों की भूमिकाओं तथा जिम्मेदारियों के वितरण का विश्लेषण करना।
2. पुरुषों की भागीदारी और घरेलू स्तर पर लैंगिक समानता के बीच संबंध को समझना।
3. घरेलू कार्यों के असमान वितरण के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारणों की पहचान करना।
4. पुरुषों की सक्रिय भागीदारी के महिलाओं के रोजगार, समय-प्रबंधन और पारिवारिक कल्याण पर संभावित प्रभावों की समीक्षा करना।
5. घरेलू श्रम में समानता को बढ़ावा देने के लिए व्यावहारिक और नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

घरेलू श्रम में लैंगिक असमानता का स्वरूप

घरेलू श्रम में लैंगिक असमानता तब दिखाई देती है जब नियमित घरेलू कार्यों और देखभाल की जिम्मेदारी मुख्यतः महिलाओं पर डाल दी जाती है, जबकि पुरुषों की भागीदारी सीमित या अवसर-आधारित रहती है। अनेक परिवारों में

महिलाएँ नौकरी करने के बावजूद घर के अधिकांश कार्यों की जिम्मेदारी संभालती हैं। इसे दोहरे कार्यभार की स्थिति कहा जा सकता है, जिसमें महिलाओं को भुगतान वाले रोजगार और अवैतनिक घरेलू श्रम दोनों का प्रबंधन करना पड़ता है।

असमानता का एक महत्वपूर्ण पक्ष कार्यों के साथ जुड़ी मानसिक जिम्मेदारी भी है। उदाहरण के लिए, बच्चों के विद्यालय से संबंधित आवश्यकताओं को याद रखना, घरेलू सामान की सूची बनाना, भोजन की योजना तैयार करना और परिवार के सदस्यों की देखभाल की व्यवस्था करना प्रायः किसी एक सदस्य पर केंद्रित रहता है। यदि पुरुष केवल निर्देश मिलने पर कार्य करते हैं, तो कार्य का वास्तविक प्रबंधन अब भी महिलाओं पर निर्भर रह सकता है। इसलिए समानता का अर्थ केवल कार्यों में कभी-कभार सहायता करना नहीं, बल्कि उनकी योजना, क्रियान्वयन और उत्तरदायित्व को भी साझा करना है।

भारत में सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताएँ भी इस असमानता को प्रभावित करती हैं। कुछ समुदायों में खाना बनाना, सफाई करना और बच्चों की देखभाल करना महिलाओं की भूमिका माना जाता है, जबकि पुरुषों से आर्थिक जिम्मेदारियाँ निभाने की अपेक्षा की जाती है। ऐसी धारणाएँ बचपन से ही बच्चों के व्यवहार को प्रभावित कर सकती हैं। लड़कों को घरेलू कार्यों से दूर रखने और लड़कियों को कम उम्र से घरेलू जिम्मेदारियाँ सौंपने से असमानता पीढ़ी-दर-पीढ़ी जारी रह सकती है।

घरेलू श्रम में पुरुषों की भागीदारी की भूमिका

1. घरेलू जिम्मेदारियों का समान वितरण

पुरुषों की नियमित भागीदारी घरेलू कार्यों के अधिक संतुलित वितरण में सहायक हो सकती है। खाना बनाना, बर्तन साफ करना, कपड़े धोना, खरीदारी करना और घर की व्यवस्था बनाए रखना परिवार के सभी वयस्क सदस्यों की साझा जिम्मेदारी हो सकती है। कार्यों का स्पष्ट और पारस्परिक सहमति से निर्धारण करने से किसी एक सदस्य पर अत्यधिक निर्भरता कम होती है। यह व्यवस्था परिवार के भीतर सहयोग और पारस्परिक सम्मान को भी प्रोत्साहित करती है।

2. महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण में योगदान

घरेलू कार्यों में पुरुषों की सक्रिय भागीदारी से महिलाओं को रोजगार, प्रशिक्षण, उच्च शिक्षा और व्यावसायिक विकास के लिए अधिक समय मिल सकता है। घरेलू जिम्मेदारियों का संतुलित वितरण महिलाओं के रोजगार जारी रखने और कार्यस्थल पर अवसरों का लाभ उठाने में सहायक हो सकता है। हालांकि, इसका प्रभाव परिवार की आर्थिक स्थिति, रोजगार की उपलब्धता, देखभाल सेवाओं और कार्यस्थल की नीतियों पर भी निर्भर करता है।

3. बच्चों के पालन-पोषण में समान भागीदारी

बच्चों की देखभाल, पढ़ाई में सहायता, विद्यालय संबंधी गतिविधियों में भागीदारी और भावनात्मक सहयोग प्रदान करना पिता तथा माता दोनों की जिम्मेदारी है। जब बच्चे अपने पिता को घरेलू कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेते देखते हैं, तो वे यह सीख सकते हैं कि घर के काम किसी एक लिंग के लिए निर्धारित नहीं हैं। इस प्रकार परिवार लैंगिक समानता की शिक्षा देने वाला पहला सामाजिक संस्थान बन सकता है।

4. पारिवारिक संबंधों और मानसिक कल्याण में सुधार

घरेलू कार्यों का असमान वितरण तनाव, असंतोष और पारिवारिक विवादों का कारण बन सकता है। इसके विपरीत, जिम्मेदारियों के न्यायपूर्ण बँटवारे से सहयोग, संवाद और पारस्परिक विश्वास को बढ़ावा मिल सकता है। पुरुषों की भागीदारी से बच्चों और अन्य आश्रित सदस्यों की देखभाल भी अधिक व्यवस्थित हो सकती है। फिर भी, पारिवारिक कल्याण पर प्रभाव इस बात से जुड़ा है कि जिम्मेदारियों का वितरण स्वैच्छिक, न्यायपूर्ण और परिवार की वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप हो।

5. सामाजिक मान्यताओं में परिवर्तन

पुरुषों का घरेलू श्रम में सक्रिय योगदान पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को चुनौती दे सकता है। जब परिवार, समुदाय और सार्वजनिक जीवन में पुरुष घरेलू जिम्मेदारियों को सामान्य व्यवहार के रूप में अपनाते हैं, तो घरेलू कार्यों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन की संभावना बढ़ती है। इस बदलाव के लिए पुरुषों को केवल सहायक नहीं, बल्कि समान उत्तरदायित्व निभाने वाले पारिवारिक सदस्य के रूप में स्वीकार करना आवश्यक है।

भारत में घरेलू श्रम और लैंगिक असमानता: सांख्यिकीय परिप्रेक्ष्य

भारत के समय-उपयोग सर्वेक्षण 2019 से प्राप्त आँकड़े घरेलू श्रम में लैंगिक अंतर को स्पष्ट करते हैं। नीचे दी गई तालिका में 6 वर्ष और उससे अधिक आयु के प्रतिभागियों के लिए अखिल भारतीय स्तर पर घरेलू सेवाओं तथा अवैतनिक देखभाल में भागीदारी और प्रतिदिन व्यतीत किए गए औसत समय को प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1. भारत में घरेलू श्रम और देखभाल कार्यों में लैंगिक अंतर (समय-उपयोग सर्वेक्षण, 2019)

गतिविधि	पुरुष	महिलाएँ
अवैतनिक घरेलू सेवाओं में भागीदारी (%)	26.1%	81.2%
अवैतनिक घरेलू सेवाओं में प्रतिदिन औसत समय	97 मिनट	299 मिनट
अवैतनिक देखभाल सेवाओं में भागीदारी (%)	14.0%	27.6%

अवैतनिक देखभाल सेवाओं में प्रतिदिन औसत समय	76 मिनट	134 मिनट
--	---------	----------

तालिका से स्पष्ट होता है कि घरेलू सेवाओं में भाग लेने वाली महिलाओं का अनुपात पुरुषों से काफी अधिक था। घरेलू सेवाओं में भाग लेने वाले पुरुष प्रतिदिन औसतन 97 मिनट व्यतीत करते थे, जबकि महिलाओं के लिए यह अवधि 299 मिनट थी। इसी प्रकार, अवैतनिक देखभाल सेवाओं में भी महिलाओं का समय अधिक था। ये आँकड़े घरेलू श्रम के असमान वितरण को दर्शाते हैं और पुरुषों की नियमित भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं। हालांकि, 2019 के आँकड़ों को वर्तमान स्थिति का प्रत्यक्ष माप नहीं माना जाना चाहिए।

प्रमुख विषयों का तुलनात्मक विश्लेषण

तालिका 2. घरेलू श्रम में पुरुषों की भागीदारी और लैंगिक समानता पर संभावित प्रभाव

प्रमुख क्षेत्र	पुरुषों की भागीदारी का स्वरूप	लैंगिक समानता पर संभावित प्रभाव
खाना बनाना और सफाई	नियमित रूप से घरेलू कार्य करना	महिलाओं के घरेलू कार्यभार में कमी
बच्चों की देखभाल	पढ़ाई, स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या में भाग लेना	माता-पिता की साझा जिम्मेदारी
बुजुर्गों की देखभाल	स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं और दैनिक सहायता में योगदान	देखभाल का अधिक न्यायपूर्ण वितरण
घरेलू योजना	बजट, खरीदारी और कार्य-सूची का साझा प्रबंधन	मानसिक श्रम और निर्णयों का बँटवारा
महिलाओं का रोजगार	घरेलू जिम्मेदारियों के अनुरूप समय देना	रोजगार जारी रखने के अवसरों में सुधार
बच्चों का समाजीकरण	लड़के और लड़कियों दोनों को घरेलू कौशल सिखाना	समानतावादी दृष्टिकोण का विकास
पारिवारिक निर्णय	घरेलू कार्यों और समय के बारे में संवाद	सहयोग और पारस्परिक सम्मान में वृद्धि

स्रोत: उपलब्ध साहित्य की विषयगत समीक्षा के आधार पर तैयार सारणी; प्रभाव संभावित हैं, किसी नए प्राथमिक अध्ययन से मापे गए परिणाम नहीं।

पुरुषों की भागीदारी में प्रमुख बाधाएँ

घरेलू श्रम में पुरुषों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए उन बाधाओं को समझना आवश्यक है जो व्यवहार परिवर्तन को सीमित करती हैं।

पहली बाधा पारंपरिक लैंगिक मान्यताएँ हैं। जब घरेलू कार्यों को महिलाओं की स्वाभाविक जिम्मेदारी माना जाता है, तब पुरुषों की भागीदारी को कभी-कभी असामान्य या वैकल्पिक योगदान समझा जाता है। दूसरी बाधा रोजगार संबंधी समय-सारणी है। लंबे कार्य-घंटे, आवागमन और नौकरी का दबाव परिवार के साथ बिताए जाने वाले समय को सीमित कर सकते हैं। हालांकि, रोजगार की व्यस्तता का समाधान केवल महिलाओं से अधिक काम करवाना नहीं, बल्कि दोनों की परिस्थितियों के अनुसार जिम्मेदारियों का न्यायपूर्ण वितरण करना है।

तीसरी बाधा घरेलू श्रम के आर्थिक और सामाजिक मूल्य की अपर्याप्त मान्यता है। चूँकि अधिकांश घरेलू कार्यों के लिए प्रत्यक्ष वेतन नहीं मिलता, इसलिए उनके महत्त्व को कम आँका जा सकता है। चौथी बाधा पीढ़ीगत व्यवहार है। यदि पुरुषों ने बचपन में घरेलू कार्यों में पुरुषों की भागीदारी के उदाहरण नहीं देखे हों, तो समानतावादी व्यवहार अपनाने के लिए उन्हें नए कौशल और दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता हो सकती है।

इसके अतिरिक्त, परिवार में आय का अंतर, ग्रामीण और शहरी परिस्थितियाँ, घरेलू सेवाओं की उपलब्धता, बच्चों की संख्या और विशेष देखभाल की आवश्यकताएँ भी घरेलू श्रम के वितरण को प्रभावित करती हैं। इसलिए एक ही समाधान सभी परिवारों के लिए उपयुक्त नहीं होगा। नीतियों और जागरूकता कार्यक्रमों में स्थानीय परिस्थितियों तथा परिवारों की विविधता को ध्यान में रखना आवश्यक है।

लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए सुझाव

1. परिवार स्तर पर साझा जिम्मेदारी: घरेलू कार्यों की नियमित सूची बनाकर कार्यों का वितरण आपसी सहमति से किया जाना चाहिए। इसमें केवल कार्य पूरा करना ही नहीं, बल्कि उसकी योजना और प्रबंधन भी शामिल होना चाहिए।
2. विद्यालयों में समानता आधारित शिक्षा: लड़कों और लड़कियों दोनों को खाना बनाना, सफाई करना, स्वयं की देखभाल करना तथा परिवार के सदस्यों की सहायता करना सिखाया जाना चाहिए।
3. पुरुषों के लिए जागरूकता कार्यक्रम: समुदायों, कार्यस्थलों और स्थानीय संस्थाओं के माध्यम से पुरुषों को अवैतनिक घरेलू श्रम के सामाजिक तथा आर्थिक महत्त्व से परिचित कराया जाना चाहिए।
4. पितृत्व अवकाश और परिवार-अनुकूल नीतियाँ: सवेतन पितृत्व अवकाश, लचीले कार्य-घंटे और उचित देखभाल सुविधाएँ पुरुषों को बच्चों की देखभाल में अधिक भागीदारी का अवसर प्रदान कर सकती हैं।
5. मीडिया की सकारात्मक भूमिका: टेलीविजन, फिल्मों, विज्ञापनों और डिजिटल माध्यमों में पुरुषों को सामान्य घरेलू कार्य करते हुए दिखाना पारंपरिक रूढ़ियों को चुनौती देने में सहायक हो सकता है।

6. घरेलू श्रम की मान्यता: समय-उपयोग सर्वेक्षणों तथा सामाजिक नीतियों के माध्यम से अवैतनिक घरेलू श्रम के योगदान और उसके असमान वितरण को नियमित रूप से मापा जाना चाहिए।
7. स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप कार्यक्रम: ग्रामीण क्षेत्रों में पानी, ईंधन, परिवहन और बाल-देखभाल सुविधाओं की उपलब्धता बढ़ाने से घरेलू कार्यों का समय कम हो सकता है। इन सुविधाओं के साथ पुरुषों की भागीदारी को प्रोत्साहित करना अधिक प्रभावी हो सकता है।

चर्चा

समीक्षित साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि घरेलू श्रम में लैंगिक समानता केवल घरेलू कार्यों के समय को बराबर बाँटने का विषय नहीं है, बल्कि परिवार में जिम्मेदारी, सम्मान और निर्णय लेने की शक्ति के समान वितरण से भी संबंधित है। पुरुषों की भागीदारी महिलाओं के समय-संबंधी दबाव को कम करने और उनके लिए शिक्षा, रोजगार तथा सामाजिक गतिविधियों के अवसर बढ़ाने में सहायक हो सकती है। फिर भी, समानता स्थापित करने के लिए यह आवश्यक है कि पुरुष घरेलू कार्यों को कभी-कभार की सहायता के बजाय नियमित जिम्मेदारी के रूप में स्वीकार करें।

भारत के समय-उपयोग सर्वेक्षण में दिखाई देने वाला लैंगिक अंतर इस विषय की प्रासंगिकता को प्रमाणित करता है। इसके साथ ही, अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्ट घरेलू देखभाल कार्य और महिलाओं की श्रम बाजार में भागीदारी के बीच महत्वपूर्ण संबंध को रेखांकित करती है। इन निष्कर्षों का संयुक्त अर्थ यह है कि घरेलू श्रम में समानता और आर्थिक सशक्तीकरण को अलग-अलग मुद्दों के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

हालाँकि, उपलब्ध साहित्य से यह दावा नहीं किया जा सकता कि पुरुषों की भागीदारी प्रत्येक परिस्थिति में महिलाओं के रोजगार या पारिवारिक कल्याण में निश्चित सुधार लाती है। परिणाम परिवार की आर्थिक स्थिति, पुरुषों के कार्य-घंटों, सामाजिक मान्यताओं और उपलब्ध सार्वजनिक सेवाओं पर निर्भर कर सकते हैं। भविष्य के शोध में ग्रामीण एवं शहरी परिवारों, विभिन्न आय-वर्गों तथा संयुक्त और एकल परिवारों के बीच तुलनात्मक अध्ययन किए जाने चाहिए। इसके अतिरिक्त, समय-उपयोग सर्वेक्षणों के साथ साक्षात्कार और दीर्घकालिक अध्ययन जोड़ने से यह समझने में सहायता मिलेगी कि घरेलू जिम्मेदारियों का वास्तविक पुनर्वितरण किस प्रकार होता है।

निष्कर्ष

घरेलू श्रम में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में पुरुषों की भागीदारी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। खाना बनाना, सफाई करना, बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल करना तथा घरेलू गतिविधियों की योजना बनाना परिवार के साझा उत्तरदायित्व हैं। जब इन कार्यों का बोझ मुख्यतः महिलाओं पर पड़ता है, तो उनके समय, रोजगार, शिक्षा और व्यक्तिगत

विकास के अवसर प्रभावित हो सकते हैं। पुरुषों की नियमित और सक्रिय भागीदारी इस असमानता को कम करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

समीक्षा से यह भी स्पष्ट होता है कि केवल व्यक्तिगत स्तर पर व्यवहार परिवर्तन पर्याप्त नहीं है। परिवारों में समानतावादी दृष्टिकोण विकसित करने के साथ विद्यालयों, कार्यस्थलों, मीडिया, समुदायों और सरकारी संस्थाओं को भी सहयोग करना होगा। पितृत्व अवकाश, परिवार-अनुकूल कार्यस्थल, गुणवत्तापूर्ण बाल-देखभाल सेवाएँ और अवैतनिक घरेलू श्रम की सामाजिक मान्यता इस दिशा में उपयोगी उपाय हो सकते हैं।

अंततः, घरेलू श्रम में वास्तविक समानता का अर्थ महिलाओं को काम में सहायता देना भर नहीं, बल्कि पुरुषों और महिलाओं के बीच जिम्मेदारियों का न्यायपूर्ण बँटवारा सुनिश्चित करना है। जब घरेलू कार्यों को साझा मानवीय और पारिवारिक दायित्व के रूप में स्वीकार किया जाएगा, तभी अधिक समावेशी, सहयोगपूर्ण और समानतापूर्ण समाज की स्थापना की दिशा में सार्थक प्रगति संभव होगी।

संदर्भ सूची

1. अड्डाती, एल., कैटानेओ, यू., एस्किवेल, वी., और वलारिनो, आई. (2018). सम्मानजनक कार्य के भविष्य के लिए देखभाल कार्य और देखभाल संबंधी नौकरियाँ। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन। (2018). सम्मानजनक कार्य के भविष्य के लिए देखभाल कार्य और देखभाल संबंधी नौकरियाँ: एशिया और प्रशांत क्षेत्र में मुख्य निष्कर्ष। आईएलओ।
2. सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय। (2020). भारत में समय का उपयोग—2019। भारत सरकार।
3. संयुक्त राष्ट्र लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण इकाई (यूएन वीमेन) और संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक मामलों का विभाग। (2023). सतत विकास लक्ष्यों पर प्रगति: लैंगिक स्त्रैपशॉट 2023। संयुक्त राष्ट्र।
4. संयुक्त राष्ट्र लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण इकाई (यूएन वीमेन) और संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक मामलों का विभाग। (2021). सतत विकास लक्ष्यों पर प्रगति: लैंगिक स्त्रैपशॉट 2021।